संवहनीय ढंग से जीना सीखना: पर्यावरण मित्र कार्यक्रम पर आधारित विचार

प्रमोद शर्मा और ऐनी ग्रेगरी

जागरूकता और शिक्षा के बीच क्या अन्तर है? हमारे यह सवाल पूछते रहने का कारण यह है कि पर्यावरण से जुड़ी चिन्ताओं का व्यापक स्तर पर लोगों को एहसास तो हुआ है, पर उन चिन्ताओं व समस्याओं का समाधान कैसे किया जाए इस पर बहुत कम विचार हुआ है। पर जब हम यह पूछते हैं कि क्या लोगों में जागरूकता लाने से इस समस्या का समाधान हो सकता है, तो फिर यह बात ध्यान में आती है कि इस सत्र में दुपहिया वाहनों से आने वाले अधिकांश लोगों ने हेलमेट क्यों नहीं पहन रखा था (यह अहमदाबाद की बात है, पर अधिकांश दूसरे स्थानों पर भी ऐसा ही हुआ होता)। तुरन्त ही इस बात का एहसास होता है कि हमें ऐसी शिक्षा की जरूरत है जिसे विद्यार्थी आत्मसात कर सकें, जो समस्याओं का निवारण कर सके और विद्यार्थियों को सिर्फ हेलमेट पहनने के फायदों से अवगत कराकर उस पर निबन्ध लिखने के बजाय उन्हें उसे कार्य रूप में परिणत करने में मदद करे।

यहाँ हम ऐसी शिक्षा की बात कर रहे हैं जो हमारे इकलौते घर, यानी इस ग्रह को बचाने के लिए काम आ सके, ऐसा ग्रह जो न सिर्फ हमें जीवन दिए हुए है, बल्कि ऐसी लाखों प्रजातियों का घर भी है जो चक्रीय व्यवस्थाओं में अजैव घटकों के साथ अन्तर्क्रियाएँ करके जीवन को सम्भव बनाते हैं। जरूरत है ऐसी शिक्षा की जो हर मनुष्य के लिए दीर्घकाल तक बने रह सकने वाले भविष्य का निर्माण करने के लिए जरूरी ज्ञान, कौशल, रवैयों और मूल्यों को हासिल करना सम्भव बनाए। इसका मतलब हुआ इस तरह के विचारों को समझना और अपने हाथ की छाप देना यानी इस ग्रह पर जीवन को लम्बे समय तक बनाए रखने के लिए खुद सक्रिय भूमिका निभाना।

री–सायक्लिड कागज बनाना सीखते विद्यार्थी

संवहनीय (सस्टेनेबिल – दीर्घकाल तक चल सकने वाले) विकास के लिए शिक्षा (ई.एस.डी.) यानी सीखने व सिखाने के सभी स्तरों पर संवहनीय विकास के महत्त्वपूर्ण मुद्दों को शामिल करना तथा इस उद्देश्य के साथ विद्यार्थियों को समर्थ बनाना कि वे अपने व्यवहार में परिवर्तन लाएँ और संवहनीय विकास के लिए काम करें। इस पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए, 2005–2014 को संवहनीय विकास के लिए शिक्षा का दशक (डी.ई.एस.डी.) बनाया गया है। इसके लिए यूनेस्को प्रमुख एजेंसी है।

संवहनीय विकास के लिए प्रदान की जाने वाली शिक्षा की मुख्य विशेषताएँ ये होती हैं :

- वह संवहनीय विकास के अन्तर्निहित सिद्धान्तों और मूल्यों पर आधारित होती है।
- उसका सरोकार संवहनीयता के सभी चार आयामों (पर्यावरण, समाज, संस्कृति और अर्थव्यवस्था) का कल्याण करना होता है।
- इसमें ऐसी विभिन्न शैक्षणिक तकनीकों का उपयोग किया जाता है जो सहभागिता आधारित सीखने तथा उच्च स्तर के सोचने के कौशलों को प्रोत्साहित करती हैं।
- वह जीवनपर्यन्त सीखने की प्रक्रिया को प्रोत्साहन देती है।
- वह स्थानीय रूप से प्रासंगिक और सांस्कृतिक रूप से उपयुक्त होती है।
- वह स्थानीय जरूरतों, दृष्टिकोण और स्थितियों पर आधारित होती है, लेकिन इस तथ्य को भी स्वीकार करती है कि स्थानीय जरूरतों को पूरा करने के उपायों के अकसर अन्तर्राष्ट्रीय प्रभाव व परिणाम होते हैं।

- उसके अन्तर्गत औपचारिक, गैर–औपचारिक तथा अनौपचारिक शिक्षा दी जाती है।
- उसमें संवहनीयता की अवधारणा की उभरती प्रकृति को स्थान दिया जाता है।
- विद्यार्थियों के सन्दर्भ, वैश्विक समस्याओं और स्थानीय प्राथमिकताओं के मुताबिक विषयवस्तु तैयार की जाती है।
- वह समुदाय–आधारित निर्णयों, सामाजिक सहिष्णुता, पर्यावरण प्रबन्धन की नागरिक क्षमताओं, किसी भी स्थिति में ढल सकने वाली विद्यार्थियों की श्रमशक्ति और एक अच्छे गुणवत्तापूर्ण जीवन को बढ़ावा देती है।
- यह शिक्षा अन्तर्विषयी है। कोई भी एक विषय अपने लिए ई.एस.डी. का दावा नहीं कर सकता, और
- इसके अन्तर्गत सभी विषय ई.एस.डी. में योगदान कर सकते हैं।

ई.एस.डी. की ये मूलभूत विशेषताएँ एक मौका प्रदान करती हैं क्योंकि इन्हें ऐसे विभिन्न तौर–तरीकों के द्वारा लागू किया जा सकता है जो स्थानीय परिस्थिति की वैश्विक जुड़ाव वाली विशिष्ट पर्यावरण–सम्बन्धी, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक दशाओं को ध्यान में रखते हैं तथा हमारी शिक्षा व्यवस्था में सीखना और सिखाना कैसे होता है इसकी एक नई मिसाल बन सकते हैं। इसका एकमात्र व्यावहारिक तरीका बच्चों को ऐसी परियोजनाओं में शामिल करना है, जो इसलिए रची गई हों ताकि बच्चे वास्तविक जिन्दगी की समस्याओं को ज्ञान हासिल करने के साधन के रूप में देखने में समर्थ बनें और उनमें वांछित संवहनीय व्यवहार की तरफ ले जाने वाले मूल्यों व उच्च स्तर के संज्ञानात्मक कौशलों का विकास हो सके। अपने विचारों में यह पद्धति नई तालीम के काफी करीब है जिसमें वास्तविक जीवन की परिस्थितियों से मिलती–जुलती दशाओं में, उत्पादक कार्य में भागीदारी को प्रोत्साहित किया जाता है।

पर्यावरण मित्र : शिक्षा में 'हाथ की छाप' पद्धति

पर्यावरण मित्र कार्यक्रम अपने भीतर सी.ई.ई. (सेण्टर फॉर एनवायरनमेंट एजुकेशन – पर्यावरण शिक्षा केन्द्र) के स्कूली व्यवस्थाओं के साथ विभिन्न सन्दर्भों में 30 सालों से भी अधिक समय से काम करने के के अनुभवों को समेटे हुए है। संवहनीयता और जलवायु परिवर्तन की शिक्षा के लिए तैयार किया गया यह कार्यक्रम ई.एस.डी. को शिक्षा का माध्यम बनाता है। यह कार्यक्रम, 2010 में दो लाख स्कूलों के साथ जलवायु परिवर्तन की शिक्षा पर एक सफल 'पिक राइट (सही को चुनो)' अभियान, तथा पर्यावरण दूत के चयन के बाद शुरू हुआ। बच्चों द्वारा डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम को पर्यावरण दूत बनाया गया और इस अभियान ने जो जोश पैदा किया उसने शिक्षण के रूप में परियोजना आधारित सीखने की पद्धति को अपनाने वाले कार्यक्रम पर ध्यान केन्द्रित करने का एक अच्छा अवसर प्रदान किया। इस तरह हाथ की छाप (अपने हाथों से करके सीखने की) पद्धति संवहनीयता की तरफ उठाए जाने वाले कदमों में 6 से 9 तक की कक्षाओं के बच्चों की भागीदारी का प्रतीक बन गई। इस कार्यक्रम की पहुँच दो लाख से भी ज्यादा स्कूलों तक है और यह 15 भाषाओं में काम करता है। यह कार्यक्रम विभिन्न स्तरों पर 160 से भी ज्यादा संगठनों द्वारा इसमें भागीदारी किए जाने से समृद्ध बना है।

इस कार्यक्रम का जोर पारम्परिक तरीकों के बजाय ऐसी 'गतिविधियों' पर है जो पाठ्यक्रम से जुड़ी हों, ताकि बच्चे जिन्दगी के स्थानीय सन्दर्भों में 'हाथ की छाप' पद्धति की प्रासंगिकता को समझ सकें और उसके आधार पर कार्य कर सकें। एक तरह से यह तरीका, किसी भी आशंका के बिना, शिक्षक की भूमिका को चुनौती देते हुए उसे विद्यार्थियों के एक साथी के रूप में देखता है और एक नई संस्कृति की नींव डालने की कोशिश करता है, जिसका मंत्र है – 'मुझे यह नहीं पता, आओ हम मिलकर इसका पता लगाएँ'।

हैण्डपम्प के आसपास के हिस्से को साफ करते विद्यार्थी

इस गतिविधियों में लेखा–परीक्षण (सर्वेक्षण, साक्षात्कार, आदि), प्रदर्शन, खेल, क्षेत्र भ्रमण, प्रस्तुतियाँ, प्रयोग, औषधीय वनस्पतियों का उद्यान तैयार करना या अपशिष्ट पदार्थों के प्रबन्धन जैसी गतिविधियाँ शामिल हो सकती हैं जिनसे विद्यार्थियों को अपने निकट के परिवेश में अनुभवजन्य सीखने के द्वारा संवहनीयता से जुड़े विचारों को समझने

में मदद मिलती है। ऐसी पद्धति बच्चों को चीजों के बीच विभिन्न अन्तर्सम्बन्धों को वाकई में 'देखने' में मदद करती है। इससे उन्हें किसी समस्या से जुड़े लोगों के अलग–अलग नजरियों से उस समस्या को देखने का अवसर मिलता है। यह ज्ञान उन्हें उन लोगों की नजर से किसी समस्या के विभिन्न सम्भावित उपायों की तरफ सोचने में मदद करता है जो सीधे तौर पर उस समस्या को झेल रहे होते हैं। यह तरीका 'समस्या निवारण' के तरीके से अलग है और इसमें जोर सिर्फ पर्यावरण सुधार के बजाय उसकी प्रक्रिया पर होता है। जहाँ, सारा महत्त्व इसी बात का होता है कि विद्यार्थियों को किसी मुद्दे की सारी बारीकियाँ दिखाई दें जैसा कि जे. कृष्णमूर्ति ने कहा है, 'समस्या को समझना ही उसका आधा समाधान होता है'। किसी मुद्दे पर इस तरह के महत्त्वपूर्ण ज्ञान और दृष्टिकोणों को हासिल करने के बाद, उसके बारे में सोच विचार करके कदम उठाना आसान हो जाता है।

काम–आधारित शिक्षण को देखने के कुछ अनुभव और उसके तरीके

पानी के विषय पर आयोजित एक स्कूल परियोजना में विद्यार्थी पानी के विभिन्न पहलुओं जैसे उसका बहाव, उसका उपयोग, बरबादी, वर्षाजल के उपयोग की सम्भावनाएँ, पानी की गुणवत्ता आदि को समझ रहे थे। शिक्षक ने विद्यार्थियों के अलग–अलग समूह बनाकर उन्हें विभिन्न कार्य सौंप दिए। समझे जाने वाले पहलुओं में पानी का बहाव, अर्थात पानी कहाँ से आता है, उसका किस तरह उपयोग होता है और फिर वह कहाँ जाता है, इन बातों को भूगोल की शिक्षा से जोड़ा गया। हमारी संस्कृति और साहित्य में पानी के विषय को भाषा की कक्षा में जोड़ा गया, स्कूल की वर्षाजल संग्रहण की सम्भावित क्षमता को गणित की शिक्षा से जोड़ा गया तथा पानी की बरबादी को सरल अवलोकनों तथा बरबादी को रोकने के उपायों के बारे में सोचने से जोड़ दिया गया। यदि विद्यार्थियों को कोई टपकता हुआ नल दिखा है और उन्होंने यह आकलन कर लिया है कि एक दिन में उससे कितना पानी रिसता है, तो प्राचार्य को इस बात के लिए राजी करने का कदम उठाया जा सकता है कि वे नलों को दुरुस्त करवाएँ या इससे भी बेहतर होगा कि वे खुद नलों को ठीक करना सीखें और सिखाएँ। विद्यार्थियों ने पानी की गुणवत्ता के सूचकों जैसे पीएच स्तर, कठोरता आदि की भी पड़ताल की। इन गुणवत्ता सूचकों को बड़ी आसानी से विद्यार्थियों के रोजमर्रा के जीवन और स्वास्थ्य के लिए पानी के उपयोग से जुड़ी कई गतिविधियों के साथ जोड़ा जा सकता है। इससे विद्यार्थियों को मानकों के साथ इस पानी की तुलना करने में और यह बताने में मदद मिलती है कि उनके स्कूल का पानी पीने लायक है या नहीं! इस प्रक्रिया के द्वारा विद्यार्थी सीखना जारी रखते हैं और यही सीखना आगे उन्हें अपने प्रयासों को सही करने/ सुधारने/ बनाए रखने के लिए सही कदम उठाने में सशक्त बनाता है। इन सभी चीजों में एक बात आम है, इन्हें करने में बहुत मजा आता है, ये मिल–जुलकर किए जाने वाले और सोचने वाले काम हैं तथा इनमें विभिन्न विषयों की अवधारणाओं को समाहित कर लिया जाता है।

जैविक रसोई उद्यान में काम करते विद्यार्थी

कामों को अलग ढंग से देखना

हम जीवन के प्रति लोगों के अलग–अलग तरह के दृष्टिकोण देखते हैं। कुछ ग्रामीण स्कूलों में, काम करना सीखने के वातावरण का हिस्सा होता है, जहाँ पर्यावरण के लिए किए जाने वाले कार्यों से जुड़ी परियोजनाओं को स्कूल में सीखने का अभिन्न साधन माना जाता है। पश्चिम बंगाल के सागर द्वीप के धब्लत लक्ष्मण परिवेश स्कूल में किए जाने वाले ऐसे कई प्रयास स्कूली जीवन का हिस्सा हैं। अपशिष्ट पदार्थों को उनकी प्रकृति के मुताबिक अलग–अलग कर लिया जाता है। गीले जैविक अपशिष्ट को कम्पोस्ट खाद में बदलकर इसे वनस्पति उद्यान में उपयोग किया जाता है, जिसके उत्पाद को स्कूल के रसोईघरों में इस्तेमाल किया जाता है। स्कूल में बिजली के उपयोग की जगह सौर ऊर्जा का उपयोग किया जाता है जिसके उपकरण गाँव में ही लगे हुए हैं और इनका प्रबन्धन विद्यार्थियों के ही हाथ में है। सागर द्वीप के ही एक अन्य स्कूल में, स्थानीय समुदाय के विद्यार्थी स्कूल में ही आम की कलमें लगाना सीखते हैं। इसके माध्यम से उन्हें न सिर्फ जैव–विविधता और खेती के उम्दा तरीकों के बारे में सीखने को मिलता है, बल्कि यह तब उनकी आय का स्रोत भी बन जाता है जब वे इन आमों को खुले बाजार में

बेचते हैं। इसके अलावा इस प्रक्रिया के माध्यम से इन बच्चों को बाजारों, लागतों, आपूर्ति व माँग के बारे में भी सीखने को मिलता है। स्कूल में बड़ी उम्र के विद्यार्थी इस हुनर को सिखाने में छोटे विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करते हैं। इस तरह से अपनी पढ़ाई के दौरान वे लोग काम करते रहते हैं जिससे उन्हें आमदनी भी होती रहती है। ये दो उदाहरण उद्यमिता के पहलू को उजागर करते हैं जिससे विद्यार्थियों को अपने भीतर सशक्तीकरण का एहसास होता है। वे अपने स्कूल की ऊर्जा की खपत का प्रबन्ध करने के प्रति आश्वस्त प्रतीत होते हैं। दूसरी तरफ वे आम की कलम लगाने में अपने कौशल को लेकर भी आश्वस्त हैं जिससे उन्हें अपने परिवार की आय में योगदान करने का मौका मिलता है। साथ ही वे यह काम करते हुए अपनी शिक्षा को भी जारी रख पाते हैं।

धब्लत स्कूल का वनस्पति उद्यान

कई स्कूलों में विद्यार्थी भूमि के बड़े विस्तार पर पेड़ लगाने के अभियान चलाते हैं, जहाँ वे जमीन खोदना, पौधे लगाना, पानी देना आदि सभी काम करते हैं क्योंकि इन स्कूलों में आज भी गैर–शिक्षक कर्मचारियों की संस्कृति नहीं है और स्कूल का सारा काम विद्यार्थियों के बीच ही बँटा रहता है। ई.एस.डी. की चुनौती यह है कि विद्यार्थी बौद्धिक रूप से जुड़े बिना सिर्फ मशीनी कर्ताओं की तरह से हाथ से किया जाने वाला सारा काम करने के बजाय, इस दौरान पेड़ लगाने के महत्त्व को समझें, जिस प्रजाति का पौधा लगा रहे हों उसके बारे में जानें, स्थानीय परिस्थिति में उसके महत्त्व को समझें इत्यादि। पर्यावरण से जुड़े कार्यों की परियोजनाओं में बहुत सारा काम होता है और अन्वेषण से लेकर, खोज, विचार, कार्य, और चिन्तन के स्तर तक पहुँचते हुए यह और जटिल होती जाती है। दरअसल, संज्ञानात्मक और शारीरिक, दोनों स्तरों पर इस तरह से किए जाने वाले काम की जटिलता बढ़ती जाती है। उदाहरण के लिए, एक स्कूल द्वारा स्थानीय समुदाय को तथा कुछ किसानों को उनके तौर–तरीके (जैसे विद्यार्थियों द्वारा प्रदर्शित कम्पोस्ट खाद व प्राकृतिक कीटनाशक इस्तेमाल करने के तरीके) अपनाने के लिए प्रेरित करने में चार साल लग गए। कई स्कूलों के साथ हमारे अनुभवों की तरह यहाँ भी हमने पाया कि ऐसे अभियान को आगे बढ़ाने में प्रमुख भूमिका शिक्षक की ही रहती है जिसके अन्दर इस तरह का समर्पण और जज्बा हो और जो लगातार नए विचारों की तलाश में रहे।

चुनौतियों से पार पाना

हमारी औपचारिक शिक्षा व्यवस्था के सामने खड़ी चुनौतियों में से एक इस बात को पहचानना है कि विद्यार्थियों को कौन सिखा सकता है। विद्यार्थी पौधों की स्थानीय प्रजातियों, उनके महत्त्व और उनके बचे रहने की दरों के बारे में स्कूल के माली से सलाह मशविरा क्यों नहीं कर सकते? क्या वह इन बातों को समझने के लिए सबसे सही व्यक्ति नहीं होगा/ होगी? क्या स्कूल में झाड़ू लगाने वाले व्यक्ति को इस बात की सबसे बहुमूल्य समझ नहीं होगी कि स्कूल अपने अपशिष्ट पदार्थ का क्या कर सकता है? परियोजना कार्यों तथा लोगों के साथ काम करने से प्राप्त हुए अनुभव के मूल्य के साथ समानुभूति रखने की और इससे भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण बात है इस मूल्य का एहसास करने की क्षमता को शिक्षकों व बच्चों के माता–पिता द्वारा बढ़ावा दिया जाना चाहिए। हमारे सामने पारम्परिक रूप से चिकित्सा करने वालों को भी शामिल करने के उदाहरण हैं, लेकिन ये बहुत विरले है और इनके साथ ज्यादा सतर्क रहने की जरूरत है।

दूसरी चुनौती है बहुविषयी या अन्तर्विषयी पद्धतियाँ जिनमें शिक्षकों और कक्षाओं के बीच सहयोग की जरूरत होती है ताकि बच्चे इस बदलाव की प्रक्रिया का प्रभावी ढंग से लाभ ले सकें। पर्यावरण की शिक्षा को रैलियों, अभियानों और कार्यक्रमों व सभाओं की शक्ल देना इसमें सबसे बड़ी रुकावट है। इसके अलावा, हमारे यहाँ विद्यार्थियों द्वारा चलाए जाने वाले ऐसे प्रयासों और परियोजनाओं के ज्यादा उदाहरण नहीं हैं जो कई विषयों में फैले हों तथा कई महीनों तक चलते रहें। यह सीखने की और शिक्षकों को दर्शाने की जरूरत है कि विद्यार्थियों द्वारा चलाई जाने वाली क्रियात्मक परियोजनाएँ कैसी दिखेंगी। सीखने के पूरे चक्र को पूरा होने में ऐसे सहयोगात्मक परिवेशों की जरूरत होगी जहाँ विद्यार्थियों को उनके भीतर छिपी पूरी सम्भावनाओं को तलाशने के लिए मार्गदर्शन मिले, अनुकरणीय व्यक्तियों का साथ मिले और

चीजों को अपनी मर्जी से करने की स्वतंत्रता मिले। सीखने की प्रक्रिया को लचीला, अनुकूलन योग्य होना चाहिए तथा वैश्विक व स्थानीय सोच को जोड़ सकना चाहिए।

ई.एस.डी. एक प्रक्रिया—उन्मुख पद्धति है और विद्यार्थियों तथा उनके परिवेश व सन्दर्भ को महत्त्व देकर यह शिक्षा को सशक्त बना सकती है। छोटे साक्ष्य बड़े साक्ष्यों की ओर ले जाते हैं। प्रत्यक्ष व दीर्घकालीन बदलावों को सामने आने में समय लगता है। पिछले कुछ सालों में, हम ऐसे प्रयासों के लिए स्कूलों और शिक्षकों के बीच ज्यादा खुलापन देख रहे हैं। पर्यावरण मित्र कार्यक्रम के अन्तर्गत हम जो भी प्रशिक्षण देते हैं उसका शिक्षकों के लिए बड़ा सन्देश यही है कि वे सिर्फ 'पर्यावरण' (अर्थात पर्यावरण के लिए होने वाले परिणाम) को ही न देखें बल्कि 'शैक्षणिक' परिणामों को भी देखें। शैक्षणिक परिणाम पेड़ लगाने के कार्यक्रम, कागज बचाने के अभियान, बिजली बचाओ दिवस के जरिए बदलाव ला सकते हैं और उन्हें स्थायित्व प्रदान कर सकते हैं।

Bibliography

1. UNESCO, web, September 21, 2014 <http://www.unesco.org/new/en/education/themes/leading-the-international-agenda/education-for-sustainable-development>
2. Sharma, Pramod, Gregory, Annie and Sinha, Ritesh, Making Environmental Education Works, Web, World Environment Education Congress 2013. <http://www.weec2013.org/adminweec/frontend.php?lang=EN&mod=program&act=detail_abstract&id=202&idA=667>
3. NCERT. "Position paper, National Focus Group on Work and Education, NCERT 2005, Print.
4. CEE Paryavaran Mitra programme, web, September 21, 2014 <http://www.paryavaranmitra.in>

पर्यावरण मित्र, पर्यावरण शिक्षा केन्द्र द्वारा भारत सरकार के पर्यावरण, वन तथा जलवायु परिवर्तन मंत्रालय व आर्सेलर मित्तल, इण्डिया के साथ की गई भागीदारी का संयुक्त प्रयास है। और अधिक जानकारी के लिए www.paryavaranmitra.in देखें।

ऐनी ग्रेगरी 2010 से पर्यावरण मित्र कार्यक्रम सचिवालय में कार्यक्रम अधिकारी हैं। वे 'यंग लीडर फॉर चेंज' नामक प्रयास में शामिल रही है जो स्थानीय समस्याओं को सुलझाने वाली परियोजनाओं में विद्यार्थियों की सहभागिता को सभी भागीदारों के समक्ष रखने का काम करता है। उन्होंने मिशीगन विश्वविद्यालय के प्राकृतिक संसाधन और पर्यावरण स्कूल से व्यवहार, शिक्षा, और संवाद विषय में स्नातक स्तर की पढ़ाई की है। उनसे annie.gregory@ceeindia.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

प्रमोद कुमार शर्मा पर्यावरण मित्र कार्यक्रम का सचिवालय देख रहे हैं। एक स्कूल शिक्षक के रूप में शुरुआत करके, आज उनके पास स्कूली व्यवस्थाओं से जुड़े रहने का 16 सालों का अनुभव है। वे भूटान, नेपाल और मालदीव में उनकी स्कूल व्यवस्थाओं के अन्दर पर्यावरण शिक्षा को मजबूत करने के लिए भेजे गए विशेषज्ञ दलों के सदस्य रहे हैं। उन्होंने UNCCD,CSD और DESD को भेजी गई भारत की राष्ट्रीय रिपोर्ट को तैयार करने में भी अपना योगदान दिया है। उनसे pramod.sharma@ceeindia.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।